

इस्लामी शब्द (2 का भाग 1)

रेटगि:

वविरण: ??? ????? ?? ??????? ??????? ?? ?????????????, ????? ????? ?? ????? ??????? ?? ?? ?????

श्रेणी: [पाठ](#) , [इस्लामी जीवन शैली, नैतिकता और व्यवहार](#) , [सामान्य नैतिकता और व्यवहार](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2014 IslamReligion.com)

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

उददेश्य:

·अपरचिति शब्द को समझना और इनका उपयोग करने मे सहज होना।

अरबी शब्द:

·???? - याचना, प्रार्थना, अल्लाह से कुछ मांगना।

·????? - मुस्लमि समुदाय चाहे वो कसिी भी रंग, जाति, भाषा या राष्ट्रियता का हो।

·???? - कुरआन का अध्याय।

हालांकि अरबी दुनिया के अधिकांश मुसलमानों की मातृ भाषा नहीं है, लेकिन यह कुरआन और इस प्रकार इस्लाम की भाषा है। इसलिए सभी मुसलमानों के लिए यह वांछनीय है कि उन्हें सामान्य इस्लामी शब्दों का कार्यसाधक ज्ञान हो। जब आप नमाज़ पढ़ना सीखते हैं और अन्य मुसलमानों के साथ अपनी बातचीत बढ़ाते हैं तो आपको इनमें से कई शब्द मिलेंगे। उनमें से कुछ अजीब और समझ से बाहर लग सकते हैं लेकिन आप जल्द ही महसूस करेंगे कि उनका उपयोग आसानी से और अक्सर किया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अधिकांश सामान्य इस्लामी शब्द दुआ में हैं और अपने आप में दुआ हैं। अरबी भाषा मुस्लमि उम्मत को एकजुट करने का काम करती है; अगर दो लोग पूरी तरह से अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं तो वे कम से कम अरबी के उपयोग से अल्लाह को याद करने और उसकी पूजा



करने के लिए एकजुट होते हैं।

1. **अस्सलाम अलैकुम**। यह इस्लामी अभिवादन है। पहला शब्द अस्सलाम, मुस्लमि और इस्लाम शब्दों के समान भाषाई मूल से लिया गया है, सा-ला-मा, जिसका अर्थ है अल्लाह की इच्छा के प्रति समर्पण और इसमें शांति, सुरक्षा और रक्षा की अवधारणा भी शामिल है। जब एक मुसलमान अस्सलाम अलैकुम कहता है तो वह अल्लाह से अभिवादन करने वाले की सुरक्षा और रक्षा मांगता है। इसका जवाब **वा अलैकुम अस्सलाम** है, जिसका अर्थ है, 'अल्लाह आपको भी सुरक्षा और रक्षा प्रदान करे'। ये संक्षिप्त अरबी शब्द मुसलमानों को यह बताते हैं कि वे मतिरों में से हैं, अजनबी नहीं।

और जब तुमसे सलाम किया जाये, तो उससे अच्छा उत्तर दो अथवा उसी को दोहरा दो। नःसिंदेह अल्लाह प्रत्येक वषिय का हिसाब लेने वाला है।" (कुरआन 4:86)

बेहतर इस्लामी अभिवादन में शामिल है, **???????? ???? ? ??????????**, जिसका अर्थ है, 'अल्लाह आपको सुरक्षा, रक्षा प्रदान करे और आप पर दया करे', और **???????? ???? ? ????????? ? ????????**, जिसका अर्थ है, 'अल्लाह आपको सुरक्षा, रक्षा प्रदान करे और आप पर दया करे और आपको आशीर्वाद दे।' इन अभिवादन का बेहतर जवाब देने का उदाहरण है, **???????? ???? ? शब्दों को सुनने के बाद आप जवाब दें, ?? ????? ???? ? ??????????**

पैगंबर मुहम्मद (उन पर ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो) ने कहा, **'जब तक आप विश्वास नहीं करेंगे तब तक आप स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे, और जब तक आप एक दूसरे से प्यार नहीं करेंगे तब तक आप विश्वास नहीं करेंगे। क्या मैं आपको किसी ऐसी बात के बारे में बताऊं जो अगर आप करें, तो आप एक दूसरे से प्यार करेंगे? सलाम के साथ एक दूसरे का अभिवादन करें।'**[\[1\]](#)

2. **????????????**। यह कुरआन में एक सूराह को छोड़कर सभी का प्रारंभिक शब्द है और इसका अर्थ है 'मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ'। यह एक ऐसा शब्द है जैसे आप अक्सर किसी मुसलमान द्वारा कोई कार्य शुरू करने से पहले सुनते होंगे। जब एक मुसलमान बस्मिल्लाह कहता है तो वह जो कुछ भी करने वाला होता है, उस पर अल्लाह की दया मांगता है, जीवन के बदलते बड़े पलों से लेकर रोजमर्रा के काम जैसे हाथ धोना या खाना। बस्मिल्लाह शब्द का उच्चारण करके हम अल्लाह को अपने कार्यों में सबसे आगे लाते हैं और ऐसा करने से संभवतः हमारे कार्यों में आने वाले किसी भी पाप को रोकते हैं।

एक मुसलमान को कुछ भी शुरू करने से पहले बस्मिल्लाह कहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, क्योंकि इससे उस कार्य को आशीर्वाद मिलता है।

3.?????????। इसका मतलब है अल्लाह की इच्छा से, या अगर अल्लाह (ईश्वर) ने चाहा। यह एक अनुस्मारक और स्वीकृति है कि अल्लाह की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं होता है।

और कदापि किसी वषिय में न कहें कि मैं इसे कल करने वाला हूं। परन्तु ये कि अल्लाह चाहे तथा अपने पालनहार को याद करें, जब भूल जाएं और कहें: संभव है, मेरा पालनहार मुझे इससे समीप सुधार का मार्ग दर्शा दे।” (कुरआन 18:23 & 24)

इंशाअल्लाह शब्द का प्रयोग इस बात पर जोर देने के लिए किया जाता है कि मनुष्य को भवषिय का कोई ज्ञान नहीं है या भवषिय को प्रभावित करने की शक्ति नहीं है। इस प्रकार वक्ता स्वीकार करता है कि यदि कुछ होता है तो वह केवल अल्लाह की इच्छा से होता है। यदि कोई व्यक्ति बाद में कुछ करने का इरादा करता है तो वह इंशाअल्लाह कहेगा, चाहे यह थोड़े समय बाद के कार्य का इरादा हो या लंबी अवधि बाद के कार्य का इरादा हो। मैं इस पत्र को अब पोस्ट करूंगा, इंशाअल्लाह, या मैं इस पत्र को कल पोस्ट करूंगा, इंशाअल्लाह, या यहां तक कि मैं इस पत्र को अगले साल पोस्ट करूंगा, इंशाअल्लाह।

इस शब्द के सही उपयोग की कुंजी इरादा है। अगर कोई व्यक्ति कुछ करने का इरादा करता है तो इंशाअल्लाह सही शब्द है। यदि किसी व्यक्ति का कभी कोई कार्य करने का इरादा नहीं है तो इंशाअल्लाह शब्द का उपयोग करना भ्रामक और गलत है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया जाता है, लेकिन वह जानता है कि उसका इसमें शामिल होने का कोई इरादा नहीं है, वह फिर भी नमिंत्रण देने वाले को खुश करने के लिए इंशाअल्लाह कहता है, तो उसने गलती की है। लेकिन अगर वह व्यक्ति उपस्थित होने के इरादे से उत्तर देता है, हां इंशाअल्लाह, लेकिन वह कार खराब होने या खराब मौसम होने की वजह से नहीं जा पाता है, तो इंशाअल्लाह कहना सही है।

इस आधुनिक युग में बहुत से लोग इंशाअल्लाह शब्द का गलत इस्तेमाल करके गलत करते हैं। उदाहरण के लिए, जब माता-पिता का बच्चे के अनुरोध को पूरा करने का कोई इरादा न हो, तो इंशाअल्लाह कहना बच्चे को यह सिखाना है कि धोखा देना स्वीकार्य कार्य है।

4. अल्हम्दुलिल्लाह। इसका मतलब है, सभी प्रशंसा और धन्यवाद अल्लाह के लिए है। जब कोई यह घोषणा करता है तो वह अल्लाह को उसके उपकार और उदारता के लिए धन्यवाद देता है। हालांकि यह एक ऐसा शब्द है जिसमें केवल धन्यवाद के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल है। यह स्वीकार करता है कि जिस भी स्थिति के लिए हम आभारी हैं, वह केवल अल्लाह की कृपा और आशीर्वाद के कारण हुई है। यह प्रशंसा का एक बयान है जिसका अर्थ प्रशंसा करना और पूजा करना है और इस प्रकार इसे प्रतिक्रिया के रूप में और स्मरण के एक सहज कार्य के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

अल्हम्दुलिल्लाह एक ऐसा शब्द है जिसै आप अक्सर, कई अलग-अलग परस्थितियों में और कई स्थितियों में सुनते हैं। यदि आप किसी मुसलमान से पूछें कि वे कैसे हैं तो वे अक्सर अल्हम्दुलिल्लाह शब्द के साथ जवाब देंगे, जिसका अर्थ है उस विशेष समय पर वह जैसा भी महसूस कर रहे हैं, वे उसके लिए अल्लाह को धन्यवाद देते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। शायद आप किसी मुसलमान को उनकी उदारता के लिए धन्यवाद दें और वे फिर से अल्हम्दुलिल्लाह शब्द के साथ जवाब देंगे, जिसका अर्थ है कि धन्यवाद और प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए है जिसने उन्हें उदार होने का साधन दिया है।

यह एक व्यापक शब्द है जिसै पैगंबर भी अल्लाह के प्रतिकृतज्जता दिखाने के लिए इस्तेमाल करते थे। पैगंबर नूह को अपना आभार व्यक्त करने का आदेश दिया गया था, अल्लाह ने कहा:

“... कह: सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जिसने हमें मुक्त किया अत्याचारी लोगों से।” (कुरआन 23:28)

पैगंबर इब्राहिम ने भी यह कहते हुए इस शब्द का इस्तेमाल किया:

“सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है, जिसने मुझे बुढ़ापे में (दो पुत्र) इस्माईल और इस्हाक़ प्रदान किये।...” (कुरआन 14:39)

फुटनोट:

[1]

???? ????????

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/269>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।